



इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

॥ संशोधक ॥

पुरवणी अंक ४९ - मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

● शके १९४५

● वर्ष : ९२

● पुरवणी अंक : ४९

संपादक मंडळ

● प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
● प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा

● प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
● प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

● डॉ. मृणालिनी शेखर ● प्रो. (डॉ.) पांडुरंग भोसले ● प्रो. (डॉ.) कामायनी सुर्वे

* प्रकाशक *

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७९, ९४०४५७७०२०

Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com

rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.



INDEX

1. **Indian Classical Theatre: A Colossal Influence on Modern Indian Drama**
- Dr. Anand Uddhav Hipparkar 9
2. **Myth and Realism in Hayavadana by Girish Karnard**
- Dr. Anil Gaman Ahire 15
3. **Intersections of Indian Knowledge Systems, Culture, and Identity in Indian English Literature**
- Ankit Wadatkar 19
4. **Manache Shloka by Samarth Ramdas Swami: Guide for Psychological Well-Being**
- Dr. Archana Pandit 24
5. **Gender Disparity: An Ongoing Battle for Equality in India**
- i) Archana Singh, ii) Dr. Rajendra Sarode 28
6. **Indian Knowledge Systems (IKS) and Its Impact on Literary Discourse**
- Dr Sandeep Hanmantrao Patil 33
7. **Indian Knowledge System and its relevance to literature**
- Dr. Anuradha Ghodke 38
8. **English Literary Criticism : 16th to 19th Century Literary Criticism**
- Dr. Kamble Satwa Ramchandra 42
9. **What Makes Us Human: A Multifaceted Investigation**
- Dr. Laxman Arun Kshirsagar 46
10. **Concept of Consciousness: East precedes West**
- Dr. Neelkanth Jagannath Dahale 50



11. **Representation of Indian Culture in Shashi Deshpande's Novels**
- Dr. Sangharsh Abhiman Gaikwad ----- 54
12. **Indian Knowledge System and Higher Secondary English Textbook: A Collaborative Effort towards Awareness and Preference for Reading Indian Texts**
- i) Kavita Kailas Jadhav, ii) Dr. Dnyaneshwar B. Shirode ----- 58
13. **Swimming through the Waves of Beauty: An Analysis of Adi Shankara's 'Soundarya Lahari' (1959)**
- i) Mr. Kuldeep Abba, ii) Prof. Dr. Shilpagauri Prasad Ganpule ----- 63
14. **Use of Indian Myths, Culture and Tradition in Girish Karnad's Plays**
- Mr. Anil Rangnath Gambhire ----- 67
15. **A Study of Oppressed Women: Rituals and Rites of Sex Slavery in Lavani and Tamasha**
- i) Mr. Ganesh Mukund Pawar, ii) Dr. Rohidas Babasaheb Dhakane ----- 72
16. **Manipur Women's Folk Literature Through Feminist Lenses**
- i) Mr. Harishchandra Vasant Rao Shelke,
ii) Dr. Rohidas Babasaheb Dhakane ----- 77
17. **Journey of an ordinary human to a spiritual guide depicted in R.K. Narayan's 'The Guide' (1958)**
- Ms. Aruna S. Shinde ----- 81
18. **Resonance of Indian Mythical Archetypes in Amrita Pritam's Pinjar**
- i) Ms. Jasleen Kaur Sohanta, ii) Dr. Ashutosh Thakare ----- 85
19. **Nurturing Morals through Storytelling in Children's Literature**
- i) Ms. Sheetal Tanaji Chandane, ii) Dr. Ganesh Baban Sonawane ----- 91
20. **Influence of Spirituality and Literature on Indian Knowledge System**
- i) Ms. Vaidehi Joshi, ii) Prof. Dr. Shilpagauri Prasad Ganpule ----- 96



21. **Marathi Literature Influenced by Sant Tukarama's Writing**
- i) Prof. Pradeep Dattatraya Kadam, ii) Dr. Vinita Basantani ----- 102
22. **Indian Values and Literature: A Brief Study**
- i) Pooja Sonwane, ii) Prof. Dr. Shilpagauri Ganpule ----- 104
23. **Influence of Indian Knowledge System (IKS) On Literature**
- Dr Prachi Sinha ----- 114
24. **Rituals-Rites in Chetan Bhagat's Two States: The Story of My Marriage**
- i) Prajakta Changdeo Jogeshwarikar, ii) Prof. Sandeep P. Khedkar ----- 117
25. **The Depiction of Values in Mahesh Iknuchwar's play 'Holi'**
- Pancham Rahul Vijay ----- 121
26. **Examining the Relationships between Spirituality and Literature:
A Spiritual Consciousness Journey**
- Mr. Rohit Rajendra Warvadkar ----- 123
27. **Beyond The Margins : Folklore As Subtext in Girish Karnad's Plays Nagamandala**
- Dr. Sunanda S. Shelake ----- 128
28. **Exploring Indian Cultural Heritage: Insights from Sarojini Naidu's Folk Poetry**
- i) Mrs. Rupali Datta Pokharkar, ii) Prof. Dr. Shilpagauri Prasad Ganpule ----- 132
29. **The Interplay of Traditional Indian Values and Modern Western Influences
in Amulya Malladi's *The Mango Season***
- i) Ms. Prerana Mahadev Kshirsagar, ii) Prof. Dr. Manjusha Dhumal ----- 136
30. **A Place of Mythology in R.K. Narayan's 'The Financial Expert' (1952)**
- Mr. Esak Sayyad Shaikh ----- 140
31. **An Overview of Indian Story Telling Tradition in The Context of Indian
Knowledge System**
- Dr. Ganesh B. Sonawane ----- 145



32. **Unrevealed Facts and Facets of Caste and Societal System in India as Depicted in *Sita Warrior of Mithila* (2017)**
 - i) L.Vijayalakshmi, ii) Prof. Dr. Shilpagauri Prasad Ganpule ----- 148
33. **Ecological Crisis in Amitav Ghosh's 'The Hungry Tide'**
 - Ashok Vitthal More ----- 154
34. **Present status and views of Teacher Educators towards Teaching of Phonetics in Training Colleges: A Study**
 - Dr. Vijay Santu Patole ----- 158
35. **Indian Knowledge System: Vedic Period to the Contemporary Indian English Drama**
 - Dr. Ayodhya Kalyan Jadhav ----- 164
36. **Sanskrit Theatre: Milestone in the Indian Drama**
 - Dr. Santosh Dadu Ghangale ----- 168
37. **Toru Datt's Verse : Myths into Poetic Rendering**
 - Dr. Mrunalini Vasant Shekhar ----- 171
38. **IKS and Indian Folktales**
 - Avinash Bhagwan Shelke ----- 175
39. **The Role of Tradition in Kamala Markandya's *Nectar in a Sieve***
 - Smt. Dipali Sadashiv Suryawanshi ----- 179
40. **A kaleidoscopic survey of Indian Classical Drama (Sanskrit Theatre): Its Historical significance and Development**
 - Dr. Ganesh Chintaman Wagh ----- 183
41. **भारतीय ज्ञान परंपरा आणि गोंदिया जिल्ह्यातील 'बहुरूपी' लोककला**
 - भूमेश्वर शंकर शेंडे ----- 189



42. भारतीय ज्ञान परंपरा :लोकसंस्कृतीवाहक पोतराज
- डॉ.धनाजी उर्फ धनंजय सोमनाथ भिसे ----- 193
43. मराठी कादंबरीतील आदिबंध व मिथक समीक्षा
- डॉ. गजानन विठ्ठलराव भोसले ----- 199
44. भारतीय महाकाव्यामध्ये स्त्रियांच्या भूमिका: चिकित्सक अभ्यास
- १) डॉ. भिमराव दुंदा केंगले, २) डॉ. राजेंद्रकुमार सुखदेव देवकाते ----- 211
45. मिथकांची सांस्कृतिक भौतिकतावादी उकल: गिरिश कार्नाड यांच्या नाटकांचे ऐतिहासिक योगदान
- डॉ. माधुरी पाथरकर ----- 216
46. भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि आदिवासी साहित्य
- १) निलोफर इसाक पठाण, २) प्राचार्य डॉ. अरुण कोळेकर ----- 221
47. भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि आदिवासी विवाहविधी
- १) प्रो. डॉ.पांडुरंग भोसले, २) डॉ. सचिन रूपनर ----- 225
48. साहित्यातील मिथके (मराठी नाटक आणि मिथक)
- डॉ. राजश्री पराग देशपांडे ----- 229
49. भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि साहित्यातील मिथके
- १) डॉ. ढोके भास्कर सुखदेव, २) उगले रामेश्वर भिकाजी ----- 232
50. भारतीय ज्ञान प्रणाली व ग्रामीण मराठी साहित्यातील धनगर समाज संस्कृतीचे दर्शन
- प्रा. डॉ. संदीप वाकडे ----- 236
51. भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि शांता शेळके यांचे अनुवादित साहित्य
- शिल्पा चंद्रकांत पाटील ----- 239
52. भौगोलिक दृष्टीकोनातून भारतीय ज्ञानप्रणाली आणि समाजभाषा विज्ञानाचा अभ्यास
- डॉ. शुभदा सुरेश लोंढे ----- 242



53. भारतीय शिक्षण प्रणाली आणि संत साहित्य
- डॉ. स्नेहल संजय मराठे ----- 248
54. भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि संत साहित्य
- स्वप्नाली प्रवीण बिरनाळे ----- 251
55. भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि आदिवासी समाजजीवन व बोलीभाषा
- डॉ. वीणा माळी ----- 256
56. महाराष्ट्रातील संत साहित्याचा कृषी अनुबंध: चिकित्सक अभ्यास
- प्रा. विठ्ठल व्यंकटी कसले ----- 258
57. भारतीय ज्ञानप्रणाली आणि मराठी लोकसाहित्यातील नृत्यप्रकार : एक आकलन
- मुंढे गोविंद देवराम ----- 262
58. भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि लोकसाहित्यातील रूढी, परंपरा व संस्कृती
- प्रो. (डॉ.) बाबासाहेब शेंडगे ----- 266
59. गौतम बुद्धांच्या धम्मातील 'करुणा-मैत्री-बंधुभाव' आणि बाबुराव बागूल यांचे कथात्म साहित्य
- डॉ. अश्विनी आत्माराम तोरणे ----- 269
60. भारतीय मूल्य एवं साहित्य (रामवृक्ष बेनीपुरी के 'सुभान खाँ' तथा 'सरजू भैया'
कहानियों के विशेष संदर्भ में)
- डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे ----- 273
61. कविता का सौन्दर्यशास्त्र और उसके सामाजिक निहितार्थ
- डॉ. अरुण प्रसाद रजक ----- 276
62. स्त्री विमर्श की हस्ताक्षर : राजी सेठ
- प्रा डॉ द्वारका गिते-मुंढे ----- 281
63. समकालीन हिंदी साहित्य मे नारी अस्मिता और अभिव्यक्ति के विविध आयाम. (मानवतावादी दृष्टि)
- प्रा. डॉ. रंजना वर्दे ----- 285



64. समकालीन आदिवासी साहित्य और जीवन
- डॉ. विद्या बाबूराव खाडे ----- 288
65. भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं नई शिक्षा नीति २०२० में सांस्कृतिक चेतना
- डॉ. राखी के शाह ----- 291
66. भक्तिकालीन साहित्य और जीवन मूल्य
- त्रिवेणी विश्वजीत जाधव ----- 295
67. लोकसाहित्य की प्राचीन परंपरा एवं परिचय
- प्रा. डॉ. सारिका आप्पा भगत ----- 299
68. लोकसाहित्यकार - डॉ. हरिसिंह पाल
- 1) प्रा.मेधा बाबासाहेब तळपे, 2) डॉ.हनुमंत दशरथ जगताप ----- 303
69. महानगरीय कथा साहित्य में नारी विमर्श
- डॉ. पवार सीताबाई नामदेव ----- 305
70. नादिरा बब्बर कृत 'सुमन और सना' नाटक में अभिव्यक्त रंगमंचीय दृष्टि
- 1) प्रो. डॉ. सदानंद भोसले, 2) विजय देवकर ----- 308
71. भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य
- प्रा.डॉ.वैशाली विठ्ठल खेडकर ----- 312
72. 'श्रीमद्भगवद्गीता' के विचारों की प्रासंगिकता: 'गाथा कुरुक्षेत्र की'
- प्रो. (डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे ----- 316





‘श्रीमद्भगवद्गीता’ के विचारों की प्रासंगिकता: ‘गाथा कुरुक्षेत्र की’

प्रो. (डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
महात्मा फुले महाविद्यालय,
पिंपरी, पुणे(भारत)

सारसंक्षेप (Abstract) :

मनुष्य के जीवन व्यवहार में व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से भारतीय ज्ञान प्रणाली मार्गदर्शक है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में ‘श्रीमद्भगवद्गीता’ के कर्मवाद एवं स्थितप्रज्ञता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनोहर श्याम जोशी के काव्यनाटक ‘गाथा कुरुक्षेत्र की’ में ‘महाभारत’ और ‘श्रीमद्भगवद्गीता’ के विचारों की प्रासंगिकता परिलक्षित होती है। प्रस्तुत काव्यनाटक में केवल कुरुक्षेत्र के मैदान पर घटित घटनाओं की पुनःप्रस्तुति नहीं की गई है, अपितु उन्हें समसामायिक संदर्भों के साथ जोड़ा गया है। नई पीढ़ी भूमंडलीकरण और बाजारवाद की चपेट में आकर विविध प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही है। नौकरी के लिए संघर्ष, प्राप्त की गई नौकरी को बनाए रखने के लिए संघर्ष, व्यावसायिकता का संघर्ष, पारिवारिक तथा सामाजिक संघर्ष जैसी समस्याओं से नवयुवक ग्रस्त हैं। उनकी स्थिति महाभारतीय अर्जुन जैसी संभ्रमित एवं दिशाहीन हो रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में अनुस्यूत ‘भगवद्गीता’ के कर्मवाद एवं स्थितप्रज्ञता से यह भटकन दूर की जा सकती है। मनुष्य को अपना कर्तव्य बिना किसी फल की अपेक्षा करते हुए अर्थात् निष्काम रीति से, कुशलता से करना चाहिए। अपना कर्तव्य निभाना चाहिए नई पीढ़ी के सक्षम युवकों को अधिकारों से वंचित रखा जाता है, तब उन्हें उसका प्रतिकार करना चाहिए। यहाँ गीता का ‘विनाशाय च दुष्कृतां’ तत्त्व प्रस्तुत है। सुख और दुःख की स्थितियों में तटस्थता का भाव गीताप्रणीत स्थितप्रज्ञता है। मनुष्य और मनुष्यता से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। अतः मूल्यहंता स्थितियों में भी मनुष्य को अपने ‘मनुष्यत्व’ की रक्षा करना आवश्यक है।

बीज शब्दावली (Key words): भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारतीय ज्ञान परंपरा, ‘श्रीमद्भगवद्गीता’, कुरुक्षेत्र, कर्मवाद, स्थितप्रज्ञता, जीवनमूल्य।

1. प्रस्तावना (Introduction) :

मनोहर श्याम जोशी हिंदी के सिद्धहस्त साहित्यकार एवं पत्रकार रहे हैं। आपने जगाथा कुरुक्षेत्र कीफ काव्यनाटक का

सजन करके आधुनिक युग के नवयुवकों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत किया है। परिवेशगत मूल्यहंता स्थितियों में मनुष्यता को बनाए रखते हुए स्थितप्रज्ञता से क्रांति करने का संदेश जोशी जी दे रहे हैं। भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद, धन की वरीयता, प्रतियोगितात्मक दौड़, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आविर्भाव, सूचनाप्रौद्योगिकी की अधिकता, यांत्रिकीकरण, मूल्यविघटन, बुद्धिवाद की अति, नई पीढ़ी का कैरियरिज्म, आर्थिक विषमता, पर्यावरणीय असंतुलन जैसी स्थितियों से घिरे हुए युवाओं को जीवनमूल्यों का आलोक प्रदान करने का काम ‘गाथा कुरुक्षेत्र की’ काव्यनाटक ने किया है। प्रस्तुत काव्यनाटक के दृश्यकाव्यात्मक रचनाविधान में मूल्यबोध के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता परिलक्षित होती है।

2. उद्देश्य (Objectives) :

प्रस्तुत शोधनिबंध के उद्देश्य निम्नांकित हैं

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली के धरातल पर ‘गाथा कुरुक्षेत्र की’ काव्यनाटक का अनुशीलन करना।
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली में अनुस्यूत कर्मवाद एवं स्थितप्रज्ञता के तत्त्वों के मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान को परिलक्षित करना।
3. आधुनिक युग में जीवनमूल्यों की नितांत आवश्यकता को प्रस्तुत करना।

3. शोध सर्वेक्षण (Review of Literature) :

मनोहर श्याम जोशी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर निम्नलिखित शोध कार्य हुआ है-

खरात, मीना. मनोहर श्याम जोशी के साहित्य में युगबोध. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, 2023

परंतु केवल ‘गाथा कुरुक्षेत्र की’ काव्य-नाटक पर कोई अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के परिप्रेक्ष्य